पाठ - 2

भारतीय संस्कृति के अग्रदूत

प्राचीन काल में हमारे देश में कुछ ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने भारतीय संस्कृति के आलोक को दूर-दूर तक फैलाया। ऐसे महापुरुषों में महर्षि अगस्त्य, महर्षि पत॰जलि तथा ऋषि याज्ञवल्क्य का नाम सम्मान पूर्वक लिया जाता है । महर्षि अगस्त्य ने सर्वप्रथम हिन्दू धर्म, कला, संस्कृति, भाषा आदि का प्रचार सुदूर दक्षिण भारत तथा जावा, सुमात्रा, बोर्नियो आदि द्वीपों तक किया। महर्षि पत॰जलि ने 'महाभाष्य' की रचना कर भाषा-साहित्य, धर्म, भूगोल, इतिहास, समाजशास्त्र आदि की गहन समीक्षा की। ऋषि याज्ञवल्क्य ने 'याज्ञवल्क्य स्मृति' की रचना कर सामाजिक रीतियों, परम्पराओं मान्यताआंे को नियमबद्ध किया। इसीलिए इन तीनों महापुरुषों का भारतीय संस्कृति के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

महर्षि अगस्त्य

महर्षि अगस्त्य का जन्म काशी (वाराणसी) में हुआ था। इनके जन्मकाल का निर्णय अभी तक नहीं हो पाया है क्योंकि इस विषय में कोई साक्ष्य नहीं मिलता। ये शैव मत के अनुयायी थे तथा काशी-विश्वनाथ मन्दिर में पूजा-पाठ करते थे। इनके जीवन का लक्ष्य धर्म का प्रचार करना था। शैव मत के प्रचार के लिए वे दक्षिण भारत गये। इनसे पूर्व किसी ने विन्ध्याचल को पार कर दक्षिण जाने का साहस नहीं किया था।

विन्ध्याचल का दक्षिणी भाग घने जंगलों से भरा पड़ा था। अगस्त्य ने अपने परिश्रम तथा ज्ञान के बल पर स्थानीय लोगों को शिष्य बनाकर उनकी सहायता से जंगल कटवाया। यहाँ उन्होंने नगरों तथा आश्रमों की स्थापना कर यहाँ के निवासियों को कला कौशल सिखाया तथा शैव मत का प्रचार किया। पांड्य देश के राजा इन्हें देवता की भाँति पूजने लगे। यहाँ अगस्त्य ने आयुर्वेद का प्रचार किया, भाषाओं का संस्कार किया तथा मूर्तिकला का ज्ञान दिया। यहाँ धर्म, कला, संस्कृति, भाषा आदि का सशक्त प्रचार एवं स्थापना करने के बाद महर्षि अगस्त्य भारत से बाहर निकले।

भारत से बाहर महर्षि अगस्त्य समुद्री यात्राएँ करते हुए अनेक द्वीपों एवं देशों में पहुँचे। इन देशों में इन्होंने हिन्दू धर्म एवं संस्कृति का प्रचार किया। इन्होंने समुद्री यात्राओं में महारत

हासिल कर ली थी इसीलिए लोग कहते हैं कि महर्षि अगस्त्य समुद्र पी गए थे। कम्बोडिया के शिलालेख के अनुसार-

ब्राह्मण अगस्त्य आर्य देश के निवासी थे। वे शैव मत के अनुयायी थे। उनमें अलौकिक शक्ति थी। उसी के प्रभाव से वे इस देश तक पहुँच सके। यहाँ आकर उन्होंने भुदेश्वर नामक शिवलिंग की पूजा अर्चना बहुत काल तक की। यहीं वे परमधाम को पधारे।

कहा जाता है कि अगस्त्य कम्बोडिया देश के आगे भी गये तथा आस-पास के द्वीपों में भारतीय संस्कृति का प्रकाश फैलाया। भारत से बाहर सुदूर देशों तक जाकर भारतीय संस्कृति एवं धर्म का प्रचार करने वालों में महर्षि अगस्त्य प्रथम व्यक्ति थे।

महर्षि पत°जलि

महर्षि पत°जलि प्राचीन भारत के लब्ध प्रतिष्ठ विद्धानों में से एक हैं। इनके जन्म के विषय में कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलता है। ये पाटलिपुत्र के राजा पुष्यमित्र शुंग के समकालीन (185 से 73 ई0पू0) माने जाते हैं। ये अपने दो मुख्य कार्यों के लिए विख्यात हैं। प्रथम तो व्याकरण की पुस्तक 'महाभाष्य' के लिए तथा दूसरे पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' की टीका लिखने के लिए इन्होंने 'योगशास्त्र' की भी रचना की।

महर्षि पत°जलि ने महाभाष्य की रचना काशी में की। काशी में 'नागकुआँ' नामक स्थान पर इस ग्रन्थ की रचना हुई थी। नागपंचमी के दिन इस कुएँ के पास अब भी अनेक विद्वान एवं विद्यार्थी एकत्र होकर संस्कृत व्याकरण के सम्बन्ध में शास्त्रार्थ करते हैं। महाभाष्य व्याकरण का ग्रन्थ है किन्तु इसमें साहित्य, धर्म, भूगोल, समाज, रहन-सहन आदि से सम्बन्धित तथ्य मिलते हैं।

महर्षि पत°जलि की मृत्यु के दो-तीन सौ साल बाद इनकी पुस्तक लुप्त हो गयी क्योंकि उस युग में छापने की मशीन नहीं थी। हाथ से लिखी पुस्तकांे की एकाध प्रतियाँ होती थीं। आज से लगभग ग्यारह सौ वर्ष पहले कश्मीर के राजा जयादित्य ने बड़े परिश्रम से इस पुस्तक की खोज की। उसने पूरी पुस्तक लिखवाकर अपने राज्य में उसका प्रचार करवाया। तब से आज तक इसकी पढ़ाई होती चली आ रही है। आज जो महाभाष्य का ज्ञान नहीं रखता उसे संस्कृत भाषा का मर्मज्ञ नहीं माना जाता। पत°जलि ने संस्कृत भाषा को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। इतने प्राचीन काल में विश्व के किसी भी देश में व्याकरण का ऐसा विद्वान नहीं हुआ। महर्षि पत°जलि उन महान पुरुषों में से हैं जो एक देश में जन्म लेकर भी पूरे विश्व के हो जाते हैं।

ऋषि याज्ञवल्क्य

ऋषि याज्ञवल्क्य के जन्मस्थान एवं समय के विषय में कोई प्रमाण नहीं मिलता। याज्ञवल्क्य नाम के दो विद्धान हुए हैं। एक महाराज जनक के समय में थे तथा दूसरे युधिष्ठिर के शासनकाल में। ये दूसरे याज्ञवल्क्य हैं। इन्हांेने धर्मशास्त्र की रचना की जिसे 'याज्ञवल्क्य-स्मृति' कहते हैं। स्मृति उस ग्रन्थ को कहा जाता है जिसमें आचार-व्यवहार, नियम-कानून

आदि की व्यवस्था दी जाती है। आजकल जिसे कानून कहते हैं उसे प्राचीन काल में धर्मशास्त्र कहा जाता था। इस ग्रन्थ को 'याज्ञवल्क्य संहिता' के नाम से भी जाना जाता है। 'याज्ञवल्क्य-स्मृति' में एक हजार बारह श्लोक हैं जो तीन अध्यायों में विभक्त हैं। इसमें मनुष्य के जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक विषय में नियम बनाये गये हैं। इस पुस्तक का अनुवाद कई भाषाओं में हो चुका है। इस पर अनेक टीकाएँ बनी हैं जिनमें 'मिताक्षरा' तथा 'दायभाग' विशेष प्रसिद्ध हैं। हिन्दू कानून के लिए यह पुस्तक आज भी प्रामाणिक मानी जाती है। पूरे भारत में मिताक्षरा के अनुसार विचार किया जाता है जबकि बंगाल में दायभाग के अनुसार।

ऋषि याज्ञवल्क्य ने शास्त्रार्थ में भी अनेक विद्वानों को हराया था। इन्होंने हमारे समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर इस ग्रन्थ की रचना की थी जो आज भी मान्य है। याज्ञवल्क्य ने भारतीय संस्कृति को अमर बनाने की सफल चेष्टा की। संन्यास लेते समय उन्होंने अपनी पत्नी मैत्रेयी को जो उपदेश दिया वह सम्पूर्ण उपनिषदों का निचोड़ है।

पारिभाषिक शब्दावली

शैवमत - शिव की उपासना करने वालों का मत

वैष्णवमत - विष्णु की उपासना करने वालों का मत

अभ्यास प्रश्न

1. महर्षि अगस्त्य ने दक्षिण भारत में कौन से सामाजिक कार्य किए ?
2. महाभाष्य की रचना किसने और कहाँ की थी ?
3. लुप्त महाभाष्य की खोज किसने करायी ?
4. ऋषि याज्ञवल्क्य ने किस ग्रन्थ की रचना की थी ?
5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

;पद्ध ..... देश के राजा अगस्त्य को देवता की तरह पूजते थे ।

;पपद्ध कम्बोडिया में अगस्त्य ने ..... नामक शिवलिंग की बहुत काल तक पूजा की थी ।

;पपपद्ध महर्षि पत॰जलि पाटलिपुत्र के राजा ..... के समकालीन थे ।

;पअद्ध इन्होंने पाणिनि के ..... की टीका भी लिखी ।

6. पता कीजिए -

;पद्ध शिलालेख किसे कहते हैं ? क्या आपके आस-पास भी कोई शिलालेख उपलब्ध है ? देखिए उस पर क्या लिखा है ?

;पपद्ध इनके बारे में अपने शिक्षक से पूछिए -

उपनिषद, भाष्य, शास्त्रार्थ